July - 2013

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30	31											

June

2013 26th Week

शोध समस्या क्या है? शोध समस्या के स्त्रोत, पहचान, वैचारिकता एवं विशेषता पर प्रकाश डालें।

Wednesday 26

परिचय (Introduction)

किसी भी मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक शोध की शुरुआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होती है। शोध समस्या का स्पष्ट रूप से पहचान कर उल्लेख करना शोधकर्त्ता के लिए एक कठिन कार्य होता है। फिर भी वह अपने अनुभवों एवं पहले किये गये शोधों की समीक्षा करके ठोस शोध समस्या बना पाता है।

जब शोधकर्त्ता किसी क्षेत्र में किये गये शोधों की समीक्षा करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विभिन्न लोगों द्वारा किये गये शोधों के परिणाम में असंगतता (inconsistency) है, तो वह स्पष्टतः इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कोई शोध समस्या मौजूद है। अब प्रश्न यह है कि शोध समस्या से तात्पर्य क्या होता है? सामान्यतः शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच एक प्रश्नवाचक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है।

Thursday 27

परिभाषा (Definition)

भिन्न-भिन्न विद्वानो ने इसे भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है -

टाउनसेण्ड (Townsend) के अनुसार -

"सामान्यतः समस्या वह प्रश्न है जिसका कोई उपलब्ध उत्तर नहीं होता है।"

"Generally speaking, a problem exists when there is no available answer to some problem."

28 Friday

मैक गुगन (Mc. Gugan) के अनुसार -

" समस्या का तात्पर्य हमारे ज्ञान की रिक्ति से है।"
"Problem refers to a gap in our knowledge."

करलिंगर के अनुसार -

" समस्या वह प्रश्नवाचक वाक्य या कथन है जो यह पूछता है कि दो या दो से अधिक चरों के बीच किस तरह का सम्बन्ध है।"

"A problem is an introgative sentence or statement that asks what relation exists between two or more variables."

समस्या का महत्व या सार्थकता
(Importance or significance of Problem)

29 Saturday

शोध के लिए समस्या या प्रश्न का होना आवश्यक है। शोधकर्त्ता के द्वारा शोधकार्य का आरंभ तभी होता है जब उसके सामने कोई समस्या होती है। इसीलिये, समस्या के चयन को शोध-प्रक्रिया का पहला चरण माना जाता है। शोधकर्त्ता सबसे पहले किसी समस्या का चयन करता है और उसके बाद शोधकार्य आरंभ करता है। शोध की सफलता समस्या की अनुकूलता एवं उपयोगिता पर निर्भर करती है। अनुकूलता का अर्थ यह है कि समस्या ऐसी हो जिसका समाधान सहज रुप से किया जा सके। उपयोगिता का अर्थ यह है कि समस्या ऐसी हो, जिसके समाधान से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानव जीवन लाभान्वित हो।

अतः शोध समस्या के कथन एक प्रश्नात्मक रुप में अभिव्यक्त हो। कथन से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उसमें क्या पूछा जा रहा है? इसका उत्तर शोध करने के बाद ही दिया जा सकता है।

July - 2013

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30	31											

July

27th Week 2013

01 Monday

शोध समस्या के स्त्रोत (Sources of research problem)

शोधकर्त्ताओं तथा मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित स्त्रोतों या आधारों का उल्लेख किया है, जिसके आलोक में शोध के लिए समुचित समस्या को ढूँढ़ निकालने में सुविधा होती है-

(1) शोधकर्त्ता का गहन अध्ययन एवं प्रवीणता (Deep study and specification of the researcher) :-

शोध के लिए समुचित समस्या के स्थापन का एक महत्वपूर्ण आधार शोधकर्त्ता का व्यक्तिगत अध्ययन तथा प्रवीणता है। जिस क्षेत्र में उसका अध्ययन गहन होता है और जिसमें वह अपने आपको प्रवीण समझता है, उस क्षेत्र में समस्या को ढूँढ़ने में उसे सुविधा होती है।

02 Tuesday

(2) शोधकर्त्ता की अभिरुचि एवं सामर्थ्य (Interest and competency of the researcher) :-

समुचित समस्या को निर्धारित करने में व्यक्तिगत अभिरुचि तथा सामर्थ्य से भी सहायता मिलती है। शोधकर्त्ता किसी विधा-विशेष के ऐसे क्षेत्र में समस्या को ढूँढ़ता है, जिसमें उसकी अभिरुचि अधिक होती है। उसी तरह समस्या को ढूँढ़ते समय अपने सामर्थ्य एवं बुद्धि को भी ध्यान में रखता है।

(3) पहले के शोधकार्य (Previous research work):-

शोध समस्या को निर्धारित करने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत वास्तव में पहले किये गये शोधकार्य है। अपनी अभिरुचि के अनुकूल व्यक्ति किसी क्षेत्र का चयन करता है। वह निर्णय लेता

है कि उसे उसी क्षेत्र में शोध करना है। फिर वह Wednesday 03 उस क्षेत्र में पहले किये गये अनुसंधानों का अध्ययन करता है और उसके आधार पर किसी समुचित समस्या की स्थापना करता है।

(4) शोध- सार (Research abstracts) :-

शोध समस्या को निर्धारित करने के लिए यह स्रोत भी काफी उपयोगी एवं प्रचलित है। शोधकर्ता जिस क्षेत्र में शोध करना चाहता है, उस क्षेत्र से सम्बद्ध शोध- सारों का अध्ययन करता है। इस अध्ययन से उसे कोई नई समस्या सूझ जाती है।

(5) शोध - पत्रिकाएँ (Research Journals) :-

शोध- पत्रिकाओं के आधार पर भी शोध समस्या को निर्धारित करने में सहायता मिलती है। नये शोधकर्ता ऐसे पत्रिकाओं का अध्ययन करता है, जिनमें भिन्न- भिन्न Thursday 04 शोधकर्त्ताओं के शोधों के सारांश तथा निष्कर्ष प्रकाशित होते हैं।

(6) विश्वज्ञान -कोष (Encyclopedia) :-

शोध समस्या को निर्धारित करने में विश्वज्ञान-कोष से भी मदद मिल सकती है। शोधकर्ता जिस विषय में शोध करना चाहता हो, उस विषय के विश्वज्ञान कोष की सहायता से वह किसी उपयुक्त समस्या को निर्धारित कर सकता है।

(7) संगत पुस्तके (Relevant books) :-

शोध समस्या को ढूँढने का एक सरल स्रोत संगत पुस्तक है। शोधकर्ता जिस विषय पर जिस क्षेत्र में शोध करना चाहता है, उससे संगत पुस्तकों का अध्ययन करता है और आवश्यक

05 Friday सूचनायें प्राप्त करता है। उन सूचनाओं के आलोक में वह समुचित समस्याओं को स्थापित कर लेता है।

(8) विशेषज्ञ सुझाव (Expert's suggestions):-

नई दिशाओं में समुचित समस्याओं को ढूँढ़ निकालने में सम्बन्धित क्षेत्र के विशेषज्ञो से बड़ी सहायता मिलती है। उनके सुझाव तथा सलाह के आलोक में नये शोधकर्ता को समुचित समस्या की खोज निकालने में काफी सुविधा होती है। व्यावहारिक रूप में यह स्त्रोत शायद सबसे अधिक प्रचलित तथा सुलभ है।

शोध समस्या की पहचान (Identification of Research)

06 Saturday शोध के लिए अनुकूल तथा उपयोगी समस्या को ढूँढ़ना या निर्धारित करना एक कठिन कार्य है। किन्तु मैकगुगन ने इसे कठिन से आसान बना दिया है। उनके अनुसार निम्नलिखित तीन परिस्थितियों में शोध समस्या की पहचान होती है-

(1) ज्ञान में रिक्ति (Gap in knowledge):-

जब परिस्थिति ऐसी होती है कि किसी प्रश्न के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचना उपलब्ध नहीं होती है तो समस्या उठ खड़ी होती है। सुनामी एक खतरनाक प्राकृतिक आपदा है, हमें इसके सम्बन्ध में पुरी जानकारी नहीं है। हम यह नहीं जानते हैं कि इसका वास्तविक कारण क्या है? यह हमारे ज्ञान में रिक्ति है। अतः शोधकर्ता के लिए यह एक अनुकूल तथा उपयोगी समस्या है। इसी तरह जीवन के जिस क्षेत्र में ज्ञान में रिक्ति नजर आए वहाँ शोध समस्या दृष्टिगोचर होगी।

08

(2) विरोधी परिणाम (Contradictory results):-

शोध के लिए समस्या के पहचान की दूसरी परिस्थिति वह है, जहाँ किसी घटना, विषय के सम्बन्ध में विरोधी परिणाम उपलब्ध हों। दूसरे शब्दों में किसी समस्या के सम्बन्ध में शोधकर्ताओं के बीच जब असहमति होती है तो ऐसी परिस्थिति में भी आगे शोध के लिए एक समस्या उठ खड़ी होती है। यहाँ विरोधी परिणामों के बीच असहमति का समाधान करके किसी निश्चित परिणाम को प्राप्त करने हेतु शोध करना आवश्यक बन जाता है।

(3) तथ्य की व्याख्या (Explaning a fact):-

जब कोई तथ्य व्याख्या रहित रह जाता है तो वहाँ एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। उस व्याख्यारहित तथ्य की व्याख्या करना आवश्यक बन जाता है। इस तरह की समस्याएँ प्राकृतिक विज्ञानों में अधिक दृष्टिगोचर होती है।

Tuesday 09

इस प्रकार स्पष्ट है कि शोधकर्ता उपर्युक्त तीन परिस्थितियों के आलोक में अपनी आवश्यकतानुसार किसी शोध समस्या का चयन कर सकता है।

शोध समस्या के चयन हेतु आवश्यक सोच-विचार (Necessary considerations for selecting a research Problem)

शोधकर्ता को समस्या का चयन करते समय निम्नलिखित सोच-विचार को ध्यान में रखना चाहिए -

(1) सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक महत्व (Theoritical and practical importance):-

शोध समस्या का चयन करते समय इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि समस्या सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण से

10 Wednesday उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हो, जो मानवजीवन के लिए कल्याणकारी हो। जैसे - भूकम्प आने का क्या कारण है? बच्चों को पढ़ाई छोड़ने के क्या कारण है?

(2) अभिरुचि एवं सामर्थ्य (Interest and competency):-

समस्या का चयन करते समय इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए की उसमें शोधकर्ता को पर्याप्त रुचि हो। समस्या ऐसी हो जिसके समाधान में वह अपने आपको सक्षम एवं समर्थ समझता हो।

(3) अनुकूल उपकरण एवं परीक्षण (Suitable tools and tests):-

शोधकर्ता को इस बात पर सोच-विचार करना चाहिए कि समस्या के समाधान के लिए अनुकूल उपकरण एवं परीक्षण उपलब्ध है या नहीं। ऐसी समस्या का चयन करना चाहिए जिसके लिए

11 Thursday अनुकूल मानक तथा परीक्षण उपलब्ध हो।

(4) योग्य मार्गदर्शन की सुलभता (Availability of competent guidance):-

शोधकर्ता को चाहिए कि वह ऐसी समस्या का चयन करे जिसके लिए उसे योग्य मार्गदर्शन उपलब्ध होने कि संभावना हो। कारण, शोध की किसी भी अवस्था में उसे कठिनाई महसूस हो सकती है और योग्य मार्गदर्शक की सलाह की आवश्यकता पड़ सकती है।

(5) समय तथा श्रम की बचत (Saving of time and labour):-

शोध समस्या ऐसी हो कि अधिक समय तक कठिन परिश्रम की आवश्यकता नहीं हो। अनुसंधानकर्ता को चाहिए की वह ऐसी

समस्या का चयन करे जिसका समाधान वह सीमित Friday 12
समय में तथा थोड़े परिश्रम के साथ करने में समर्थ हो। व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह सोच-विचार आवश्यक है।

(6) समस्या कथन का स्वरूप (Nature of Problem statement):-

समस्या के कथन को प्रश्नवाचक वाक्य के रूप में होना चाहिए। क्या परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत बनता है?

(7) समस्या कथन की लम्बाई (Length of the Problem statement):-

समस्या के कथन की लम्बाई न तो इतनी अधिक हो और न तो इतनी कम हो कि उसके अर्थ को समझना कठिन हो जाए। इसकी लम्बाई मध्यम हो ताकि उसके कार्य को समुचित रूप से समझा जा सके। Saturday 13

(8) स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर की स्पष्टता (Clarity of independent and dependent variables):-

समस्या का कथन ऐसा हो जिसमें स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर का स्पष्ट उल्लेख किया गया हो। जैसे- क्या परिणाम के ज्ञान से निष्पादन (Performance) उन्नत बन जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शोध- समस्या का चयन करते समय शोधकर्ता को उपर्युक्त बातों पर सोच-विचार करना चाहिए ताकि समुचित समस्या का चयन हो सके।

July - 2013

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30	31											

July

29th Week 2013

15 Monday

शोध समस्या के प्रकार (Types of research problem)

मनोवैज्ञानिकों तथा अनुसंधानकर्त्ताओं ने समस्या के निम्नलिखित प्रकारों का उल्लेख किया है

(1) ऐतिहासिक समस्या (Historical problem):-

इस प्रकार की समस्याओं का तात्पर्य ऐसी समस्याओं से है, जिनका सम्बन्ध अतीत की घटनाओं से होता है। दूसरे शब्दों में ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित प्रश्नों को ऐतिहासिक प्रश्न कहते हैं। जैसे- हल्दी घाटी का युद्ध कब हुआ? भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण कब हुआ था? ऐसी समस्याओं पर आधारित शोध को ऐतिहासिक शोध कहते हैं।

(2) सैद्धांतिक समस्या (Theoretical problem):-

16 Tuesday

इस प्रकार की समस्या का अर्थ वह समस्या है, जिसका सम्बन्ध मौलिक विज्ञान या शुद्ध मनोविज्ञान से होता है। भौतिकी, रसायन विज्ञान आदि मौलिक विज्ञानों में इस तरह की समस्या का महत्व अधिक पाया जाता है। इसी प्रकार - सामान्य मनोविज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, पशु-मनोविज्ञान आदि शुद्ध मनोविज्ञानो में सैद्धान्तिक समस्या का महत्व अधिक होता है।

(3) व्यावहारिक समस्या (Practical problem):-

इस प्रकार की समस्या का तात्पर्य उन समस्याओं से है, जिसका सम्बन्ध व्यावहारिक विज्ञान या व्यावहारिक मनोविज्ञान से होता है। शिक्षा मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान में ऐसी समस्याओं का महत्व देखा जाता है।

(4) सर्वेक्षण समस्या (Survey problem):- Wednesday 17

इस प्रकार की समस्या का तात्पर्य ऐसी समस्याओं से है, जिसका उपयोग समाज विज्ञान, मानव विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, भूगोल आदि सामाजिक विज्ञानो में अधिक होता है।

(5) प्रायोगिक समस्या (Experimental problem):-

प्रायोगिक समस्या का अर्थ उस समस्या से है जिसमें दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध का उल्लेख किया जाता है। ऐसी समस्या का उद्देश्य किसी स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर के बीच सम्बन्ध को निर्धारित करना।

(6) सामाजिक समस्या (Social problem):-

इस प्रकार की समस्या का अर्थ उन समस्याओं Thursday 18
से है जिनमें सामाजिक मूल्यों की खोज, सामाजिक नीति एवं योजना के निर्माण तथा सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित नीति एवं योजना के निर्माण तथा सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित प्रश्न होते हैं।

(7) दार्शनिक समस्या (Philosophical problem):-

इस प्रकार की समस्याओं में दार्शनिक विषयों के सम्बन्ध में उल्लेख किया जाता है। ऐसी समस्याएँ सैद्धान्तिक होती हैं। दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि क्षेत्र में ऐसी समस्याओं की प्रधानता पायी जाती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शोध समस्या के उपर्युक्त कई प्रकार हैं। शोधकर्ता अपनी आवश्यकता तथा सुविधानुसार इनमें से किसी भी समस्या का चयन करके अपने लक्ष्य को हासिल कर सकता है।

July

29th Week 2013

19 Friday

एक अच्छी समस्या की विशेषताएँ (Characteristics of a good problem)

मनोवैज्ञानिको ने एक अच्छी शोध समस्या की कई विशेषताओं का उल्लेख किया है। इनमें निम्न प्रमुख हैं -

(1) प्रश्नवाचक कथन (Introgative statement):-

एक अच्छी समस्या की पहचान यह है कि उसे प्रश्नवाचक वाक्य के रूप में होना चाहिए। इसी कारण समस्या को प्रश्न भी कहा जाता है। टाउनसेण्ड ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि शोध समस्या सदा प्रश्न के रूप में होती है।

(2) चरों के बीच सम्बन्धों का विवरण (Stating relation between variables):-

20 Saturday अच्छी समस्या वह है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्धों का विवरण प्रस्तुत करता हो। प्रत्येक प्रश्नवाचक कथन वास्तव में चरों के बीच सम्बन्ध का उल्लेख करता है। समस्या का उद्देश्य यह देखना होता है कि दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है।

(3) स्पष्टता एवं असंदिग्धता (Clarity and unambiguity):-

एक अच्छी समस्या के लिए यह भी आवश्यक है कि यह स्पष्ट एवं संदिग्ध प्रश्न के रूप में हो। प्रश्न ऐसा हो जिसका अर्थ स्पष्ट हो एवं द्विअर्थी न हो। प्रश्नवाचक वाक्य में ऐसे शब्दों का व्यवहार नहीं किया जाए जिसका अर्थ अस्पष्ट एवं द्विअर्थी हो।

(4) समाधान योग्य (Solvable) :-

Monday 22

मैक गूगन (Mc. Guigan) के अनुसार एक वैज्ञानिक समस्या अथवा एक अच्छी समस्या वह है जो समाधान योग्य होती है। जिस प्रश्न या समस्या का समाधान करना संभव नहीं हो उसको वैज्ञानिक समस्या नहीं कहेंगे। क्या आत्मा अमर है? क्या व्यक्ति मरने के बाद पुनः जन्म लेता है? इस तरह के प्रश्नों या समस्याओं को वैज्ञानिक समस्या नहीं कहा जायेगा, क्योंकि इनका समाधान करना संभव नहीं है।

(5) आनुभविक परीक्षण (Empirical testability) :-

एक अच्छी समस्या केवल समाधान नहीं होती है बल्कि परीक्षणीय भी होती है। परीक्षणीय समस्या वह प्रश्न है जिसका उत्तर हाँ या नहीं में दिया जा सके।

(6) अनुकूल अध्ययन विधि की सुलभता (Availability of suitable methodology) :-

Tuesday 23

एक अच्छी समस्या की एक विशेषता यह भी है कि उसके समाधान तथा परीक्षण के लिए कोई अनुकूल विधि उपलब्ध हो। आनुभविक परीक्षण के लिए अनुकूल अध्ययन विधि का होना आवश्यक है।

(7) सीमांकित स्वरूप (Definite nature) :-

एक अच्छी समस्या वह प्रश्न है जिसका स्वरूप सीमांकित हो। जैसे भूकम्प क्यों आता है? यह ऐसा प्रश्न है जिसका सीमांकन सम्भव नहीं है। अतः इसे अच्छी समस्या नहीं कहेंगे। दूसरी ओर क्या प्लेट टेक्टॉनिक के कारण भूकम्प आता है? स्पष्टतः इस प्रश्न या समस्या का स्वरूप सीमांकित तथा निश्चित है।

24 Wednesday

(8) परिमाणात्मक स्वरूप (Quantitative nature) :-

एक वैज्ञानिक समस्या अथवा एक अच्छी समस्या का स्वरूप परिमाणात्मक होता है। इसका अर्थ यह है कि समस्या से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मापन संभव होता है। जैसे- क्या धकान के कारण उत्पादन घटता है? इस समस्या से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मात्रात्मक मापन संभव है। दूसरे शब्दो में यहाँ दोनों चरों अर्थात् धकान तथा उत्पादन के बीच मात्रात्मक सम्बन्ध को व्यक्त करना संभव है।

(9) परिकल्पना के रूप में परिवर्तनीय (Convertable into hypothesis) :-

एक अच्छी समस्या की एक विशेषता यह है कि वह परिकल्पना के रूप में परिवर्तनीय हो। समस्या को पहले

25 Thursday

परिकल्पना में बदल दिया जाता है और फिर आनुभविक अध्ययन के आधार पर परीक्षण किया जाता है। जैसे- निष्पादन (Performance) पर परिणाम के ज्ञान का क्या प्रभाव पड़ता है? इस समस्या को एक परिकल्पना में बदला जा सकता है कि "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन में उन्नति होता है।" फिर आनुभविक अध्ययन के आलोक में इस परिकल्पना की जाँच की जा सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion) :-

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि शोध-समस्या वह "प्रश्न" है जिसका कोई तात्कालिक उत्तर उपलब्ध नहीं है। शोध के लिए समस्या भी ऐसी होनी चाहिए जिसका उत्तर देना संभव हो। जिस समस्या का उत्तर अथवा हल संभव नहीं हो उसे शोध-समस्या या वैज्ञानिक समस्या नहीं कहेंगे।